Acharya Anupam Jolly
Astrologer, Ramal Shastri, Vastu Expert

International School of Astrology and Divine Sciences
www.astrologynspiritualism.com, www.ramalastrology.com

ramal astrology

www.RamalAstrology.com

रमल विद्या के द्वारा वर्षफल का ज्ञान

रमल विद्या का उद्गम: भविष्य को जानने की अनेक पद्धतियों का चलन विश्वभर में अनादिकाल से रहा है और मनुष्य किसी न किसी प्रकार से अपनी जिज्ञासा शान्त करने हेतु अनेक विद्याओं जैसे नाड़ीग्रंथ, प्रश्न ज्योतिष, शगुन विचार, कृष्णमूर्ति पद्धति, पक्षियों की सहायता से भविष्य, रमल पद्धति आदि-आदि का सहारा लेता रहा है।

पौराणिक काल से रमलशास्त्र विद्या प्रचलित है इसकी जानकारी उपलब्ध है। द्वापर युग में यह शास्त्र प्रचलित था इसका उल्लेख मिलता है। इतिहास में जिमुतवाहन के दरबार में रहे विष्णुगुप्त शर्मा इस शास्त्र के उत्तम ज्ञाता थे। पांडवों के दरबार के 'मय' भी इस विद्या में निपुण थे। परमपूज्य आद्य शंकराचार्य भी इस शास्त्र का गहन ज्ञान रखते

थे। रमल शास्त्र के आधार पर ही राजा सुधन्व के दरबार में 'बंद घट' में क्या रखा गया था, सही-सही बताया जा सका। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं।

ऐसा माना जाता है कि जनोपयोगी सभी शास्त्रों का उगम उमा-महेश्वर के द्वारा हुआ है। कहा जाता है कि माता पार्वती ने भगवान शंकर से 'सर्वकालीन शास्त्र' के ज्ञान को विशद करने की विनती की और इस शास्त्र का जन्म हुआ। द्वापर युग के उत्तरार्द्ध में किसी विद्वान युवक ने शिवजी की प्रखर आराधना की और शिवजी को प्रसन्न कर लिया। उसने शिवजी से भूत, वर्तमान तथा भविष्य को जानने के ज्ञान का वरदान माँगा। तब शिवजी ने पूर्व रचित 'रमल विद्या' के ज्ञान का वरदान उसे दिया और कहा कि पृथ्वी पर इस ज्ञान के प्रथम ज्ञाता का सम्मान तुम्हें मिलेगा और तुम 'आदम' नाम से पृथ्वी पर जाने जाओगे। यथा समय आदम के अनुयायियों ने इस विद्या का प्रचार एवं प्रसार किया। इसीलिये भारतीय इस बात का दावा करते हैं कि 'रमल शास्त्र' का उगम भारत में ही हुआ है। पुरातन काल से 'पाँसो' का जो खेल खेला जाता है उसे 'रमल पाँसो' के नाम से जाना जाता है। इसीलिये इस शास्त्र को 'रमल शास्त्र' कहलाने की पुष्टि मिलती है।

भारतीयों की तरह यवन भी इस बात का दावा करते हैं कि यह शास्त्र उनके देश से ही सभी जगह पहुँचा है। उनके अनुसार हजरत दानियल अल हिस सलाम ने राजस्थान के रेगिस्तान में मुहम्मद पैगम्बर की इबादत की और नेमत माँगी कि 'या खुदा', भारत में इस्लाम को पुख्ता बनाने के लिये मुझ पर मेहर नजर कर ऐसा इल्म दे कि जिसकी वजह से आम लोग मुझ पर बे-इंतिहा यकीन करे और मैं इस्लाम की जड़ें मजबूत कर सकूँ। 'दानियाल' की इस प्रार्थना से खुश होकर हजरत जिब्राईल अलियस सलाम (पैगम्बर के दूर) प्रगट हुए और उन्होंने दानियल को रेगिस्तान की रेती में अपने पंजों को हथेली की ओर से दबाने की आज्ञा दी। इस दबाव से रेती में जो आकृति निर्माण हुई उसी के गहरे अभ्यास से उस शास्त्र का निर्माण हुआ। 'रमल' शब्द का अर्थ 'रेती' भी है। चूँकि रेत में इस शास्त्र का निर्माण हुआ इसीलिये इसे 'रमलशास्त्र' कहा जाता है। अत: इस शास्त्र के प्रचार एवं प्रसार का दावा वे करते हैं।

वैसे ज्यादातर लोग रमल विद्या को देवकी नन्दन खत्री के उपन्यास चन्द्रकान्ता के पंडित जगन्नाथ नामक किरदार के रूप में भलीभाँति जानतें है।

आगामी वर्ष के फलाफल को जानने की रमल विधी :

किसी मनुष्य के आगामी वर्ष के फलाफल को जानने के लिए उस वर्ष के प्रारभिक दिन अथवा किसी अन्य शुभ दिन में पाँसे डाल कर सोलह भाव की रमल कुण्डली का निर्माण करना चाहिये।

प्रश्नकर्त्ता मनुष्य के लिए नव वर्ष कैसा रहेगा, इसकी जानकारी प्राप्त करने की विधि निम्नानुसार है -

रमल प्रस्तार या रमल कुण्डली की बनने वाली बारहों शक्लों के योग से शुभाशुभ शक्लों के आधार पर लाभ अथवा हानि का निर्णय करना चाहिए। जिसके लिये नियम निम्न प्रकार से है :-

(१) प्रस्तार के पहले घर से वर्ष के पहले महीने का, दूसरे घर से दूसरे महीने का, तीसरे से तीसरे का, इसी प्रकार बारहवें घर तक क्रमश: उसी महीने का फल निश्चित करना चाहिए। जिस घर में शुभ शक्ल पड़ी हो, उस महीने का फल शुभ, जिसमें अशुभ शक्ल पड़ी हो, उस महीने का फल अशुभ, और जिसमें मध्यम शक्ल पड़ी हो, उस महीने का फल मध्यम समझना चाहिए।

(२) जिस घर में शुभ शक्ल पड़ी हो, नव वर्ष में उस घर से सञ्बन्धित वस्तु का लाज़ और जिस घर में अशुभ शक्ल पड़ी हो, उस घर में सञ्बन्धित वस्तु की हानि कहनी चाहिए।

(३) यदि किसी घर में अशुभ शक्ल पड़ी हो, परन्तु वह शक्ल शकुन पंक्ति (जिसे हम स्थिर कुण्डली भी कहते हैं, जिसमें लहियान से शुरू होकर तरीख तक का निश्चित क्रम होता है।) में अपने घर की हो तो उसे वृद्धिदायक समझना चाहिए।

(४) जिस घर में खारिज शक्ल पड़ी हो, उसका 'व्यय' सञ्बन्धी फल समझना चाहिए। जिस घर में दाखिल शक्ल पड़ी हो, उसको लाभ सञ्बन्धी फल समझना चाहिए। जिस घर में 'मुन्किलीब' शक्ल पड़ी हो, उसका फल 'खारिज' के समान समझना चाहिए। जिस घर में 'साबित' शक्ल पड़ी हो, उसका फल 'दाखिल' के समान समझना चाहिए।

(५) जिस घर की शक्ल शुभ घर में 'पुनरुक्त' हुई हो उसका फल शुभ समझना चाहिए। यदि अशुभ घर में 'पुनरूक्त हुई हो तो अशुभ और यदि मध्यम घर में पुनरूक्त हुई तो मध्यम समझना चाहिए

(६) मास सञ्बन्धी शक्ल का जो तत्त्व हो, और वह जिस स्थान में पुनरुक्त हुई हो, उसका जो तत्त्व हो- इन दोनों में यदि परस्पर मित्रता हो तो सञ्पूर्ण शुभ फल कहना चाहिए। यदि शत्रुता होतो अशुभ फल कहना चाहिए।

(७) प्रकारान्तर से, मास सञ्बन्धी शक्ल जहाँ पुनरुक्त हुई हो, शकुन पंक्ति क्रम में उस घर की जो शक्ल हो और मास-सञ्बन्धी शक्ल - इन दोनों के योग से एक शक्ल तैयार करें। यदि वह शक्ल शुभ हो तो शुभ और अशुभ हो तो अशुभ फल कहना चाहिए। उत्पन्न शक्ल प्रस्तार में जिस घर में पड़ी हो, उसके सञ्बन्ध से पूर्वानुसार फल कहना चाहिए।

(८) जिस मास सञ्बन्धी शक्ल की साक्षी शक्ल बली हो, वह मास शुभ, अशुभ हो तो अशुभ तथा मध्यम हो तो मध्यम फल देने वाली होती है।

यदि साक्षी शक्ल शुभ शक्लों से बनी हो तो शुभ, अशुभ शक्लों से बनी हो तो अशुभ शक्लों से बनी हो तो मध्यम फल कहना चाहिए।

साक्षी घर : पहले घर का साक्षी तेहरवाँ तथा आठवाँ, दूसरे घर का साक्षी चौदहवाँ तथा सांतवाँ, तीसरे घर का साक्षी छठा और पाँचवाँ, चौथे घर का साक्षी सौहलवाँ, पाँचवें घर का साक्षी नवां, छठे घर का साक्षी दसवाँ, सातवें घर का साक्षी ग्यारवाँ, आठवें घर का साक्षी बारहवाँ, नवें घर का साक्षी पन्द्रहवां, दसवें घर का साक्षी छटा, ग्यारवें घर का साक्षी सांतवाँ, बाहरवें घर का साक्षी आठवा घर होता है।

(९) यदि मास सञ्बन्धी शक्ल की साक्षी शक्ल शुभ घर में 'पुनरूक्त' हुई हो तो शुभ और अशुभ घर में पुनरुक्त हुई हो तो अशुभ फल कहना चाहिए।

(१०) मास सञ्बन्धी शक्ल जहाँ पुनरुक्त हुई हो उस घर का जो तत्त्व और उसकी साक्षी शक्ल का जो तत्त्व हो उन दोनों में यदि मित्रता हो तो शुभ, शत्रुता हो तो अशुभ एवं समता हो तो मध्यम फल समझना चाहिए।

(११) जिस शक्ल से विचार किया जाता है, उस घर के स्वामी की दूसरी शक्ल जो हो वह उसकी **शरीक (साझीदार)** होती है। अतः उस शक्ल के लिए भी साक्षी शक्ल की भांति ही विचार करना चाहिए।

(१२) जिस शक्ल की जो विपरीत शक्ल है, वह उसकी अकश अर्थात् आभास होती है। जैसे कि शक्ल लह्यान ( ) की विपरीत शक्ल 'अंकीश' ( ) है। अत: 'अंकीश' शक्ल 'लह्यान' की आभास हुई। यदि आभास शक्ल शुभ घर में पड़ी हो तो शुभ और अशुभ घर में पड़ी हो तो अशुभ फल समझना चाहिए।

दशा - फल के लिए साबित प्रस्तार

मास का फल कहने के पश्चात् अब दशा-फल के लिए साबित प्रस्तार का नियम कहा जाता है, जो इस प्रकार है-

दशा-फल जानने के लिए सर्वप्रथम पांसे डालकर प्रस्तार बनाऐं। फिर उस प्रस्तार की तेरहवीं, दसवीं, ग्यारहवीं तथा चौदहवीं शक्लों से दूसरा प्रस्तार तैयार करें। अर्थात् पहली की जगह तेरहवीं को, दूसरी की जगह दसवीं को, तीसरी की जगह ग्यारहवीं को तथा चौथी की जगह चौदहवीं शक्ल को मान कर दूसरा प्रस्तार तैयार करें।

इस प्रस्तार में यदि पहली शक्ल के तुल्य तेरहवीं, दूसरी के तुल्य दसवीं, तीसरी के तुल्य ग्यारहवीं तथा चौथी के तुल्य चौदहवीं शक्ल हो तो वह प्रस्तार 'साबित' संज्ञक होगा।

यदि इस प्रकार की शक्ल न मिलें तो फिर उस प्रस्तार की तेरहवीं, दसवीं, ग्यारहवीं तथा चौथी के तुल्य चौदहवीं शक्ल हो तो वह प्रस्तार साबित संज्ञक होगा।

यदि इस प्रकार की शक्ल न मिलें तो फिर उस प्रस्तार की की तेरहवीं, दसवीं, ग्यारहवीं तथा चौदहवीं शक्ल को लेकर पुन: तीसरा प्रस्तार तैयार करें। इसके पहले, दूसरे तीसरे तथा चौथे घर यदि क्रम से तेरहवीं, दसवीं, ग्यारहवीं तथा चौदहवीं शक्ल से मिलते हों तो यह प्रस्तार साबित संज्ञक होगा।

यदि उक्त प्रकार से शक्लें न मिलें तो पुन: तेरहवीं आदि चार शक्लों से नया प्रस्तार बनायें और इस किया को तब तक दुहराते रहें, जब तक कि 'साबित' संज्ञक प्रस्तार उत्पन्न न हो। 'साबित' संज्ञक प्रस्तार ६ प्रस्तारों से आगे नहीं जाता, अपितु ६ प्रस्तारों के भीतर ही बन जाता है।

साबित प्रस्तार का फल

यदि पहले प्रस्तार में ही साबित प्रस्तार बन जाए तो उसे सुख एवं लाभ को देने वाला समझना चाहिए। यदि दूसरे प्रस्तार में साबित प्रस्तार बने तो सुख, तीसरे में बने तो धन-प्राप्ति, चौथे में बने तो मध्यम, पाँचवें में बने तो कष्ट एवं छठे में बने तो अत्यन्त कष्टदायक समझना चाहिए।